इकाई 30 भवानी प्रसाद मिश्र

इकाई की रूपरेखा

30.0 उद्देश्य
30.1 प्रस्तावना
30.2 कवि परिचय
  30.2.1 जीवन-परिचय
  30.2.2 रचनाकार-व्यक्तित्व
  30.2.3 कृतियाँ
30.3 काव्य संवेदना
  30.3.1 काव्यानुभूति
  30.3.2 कविता की मूल्य दृष्टि
  30.3.3 मानव और प्रकृति
  30.3.4 जन जीवन के संघर्षों की वाणी
  30.3.5 विसंगति और विडम्बना
  30.3.6 जीवन दर्शन
30.4 काव्य-शिल्प
  30.4.1 काव्य-रूप
  30.4.2 काव्य-भाषा और सर्जनात्मकता
  30.4.3 काव्य प्रतीक और काव्य बिंब
  30.4.4 लय और छंद
30.5 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या
30.6 मूल्यांकन
30.7 विचार संदर्भ और शब्दावली
30.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
30.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

30.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- छायावादोत्तर कविता की पृष्ठभूमि में भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य संवेदना से साक्षात्कार करा सकेंगे,
- कवि-परिचय, रचनाकार-व्यक्तित्व के बुनियादी सरोकारों से परिचित होने के साथ उनकी कृतियों के विषय में बता सकेंगे,
- कवि की काव्यानुभूति की बनावट में गांधी विचार-दर्शन की भूमिका से परिचित करा सकेंगे,
- नयी कविता के अनास्थावादी तेवर से अलग हटकर आस्थावादी मूल्यों की खुली वकालत के कारणों को बता सकेंगे,
- भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य-स्वभाव, काव्य-प्रेरणा, काव्य-दृष्टि और उद्देश्य का परिचय दे सकेंगे,
- कवि की अभिव्यक्ति-सम्पदा के सहज-सौन्दर्य की मार्मिकता से आत्मीय संवाद कर सकेंगे।

30.1 प्रस्तावना

कवि-जीवन के आरंभ से ही भवानी प्रसाद मिश्र छायावादी कविता की मूल दृष्टि और काव्य-शिल्प के मुहावरे के प्रति विद्रोही बनकर काव्य-सर्जना में प्रवृत्त हुए। उन्होंने अपनी कविता की स्वतंत्र राह स्वयं निर्मित की और किसी भी तरह की देशी-विदेशी काव्य प्रवृत्तियों के अनुकरण से दूर रहे। उनके कवि-मन का निर्माण वाल्मीकि-कालिदास, कबीर और सूर, भारतेन्दु और पं. रामनरेश त्रिपाठी की स्वच्छन्दता प्रिय दृष्टि ने किया। राष्ट्रीय जागरण ने उनकी सर्जनात्मकता में देश-प्रेम के संस्कारों को बलिष्ठ बनाया और मध्य प्रदेश की प्रकृति ने उनमें नया अनुराग पैदा किया। वे एक प्रकार से नर्मदा की तप-त्याग-धारा के परशुराम तेज वाले सन्त-कवि हैं। इस आधुनिक संत कवि को सत्य कहने और लिखने में ही जीवन की सार्थकता दिखाई देती है। वे किसी भी साहित्यिकवाद के भीतर बंधकर नहीं लिखते। दरअसल, पराधीनता उन्हें किसी तरह की स्वीकार न थी — न वाद की, न अंग्रेज की, न परायी भाषा की, न अभिव्यक्ति की, न पद-सत्ता की। वे सदैव स्थापित व्यवस्था के विरोध में रहे। दलितों-उपेक्षितों, दुर्भाग्य के मारे ग्रामीण बच्चों के लिए उन्होंने सदैव संघर्ष किया। फलस्वरूप उनकी कविता आत्माभिव्यक्ति के भीतर आत्मदान और आत्मप्रसार की कविता है। कहना न होगा उनमें इकबाल और निराला दोनों की अनुगूंज सुनाई देती है।

30.2 कवि परिचय

30.2.1 जीवन-परिचय

कविवर भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म (29 मार्च 1913 ई.) टिगरिया ज़िला होशंगाबाद (म. प्र.) में हुआ। उनके पिता सीताराम मिश्र संस्कारवान व्यक्ति थे और हिंदी-संस्कृत अंग्रेज़ी तीनों का ज्ञान रखते थे। रात-दिन रामायण का पाठ करते थे और बालक भवानी प्रसाद को कविता सुनाते और याद कराते थे। भवानी प्रसाद की माँ गोमती देवी परोपकारी वैष्णव संस्कारों की महिला थीं। मातृ-संवेदनाओं और पिता के काव्य-संस्कारों का प्रभाव भवानी प्रसाद के काव्य-संस्कारों पर गहरा है। उनकी मानसिकता का गठन गाँव नदी-पर्वत से हुआ। "छोटी सी जगह में रहता था, छोटी-सी नदी नर्मदा के किनारे, छोटे से पहाड़ विन्ध्यांचल के आंचल में साधारण लोगों के बीच। एकदम घटना विहीन अविचित्र मेरे जीवन की कथा है। साधारण मध्य वित्त के परिवार में पैदा हुआ, साधारण पढ़ा-लिखा और काम भी किए वे भी असाधारण से अछूते। मेरे आस-पास के तमाम लोगों की-सी सुविधाएँ-असुविधाएं मेरी थी। नरसिंह पुर में रहे और पूरे देश को वहीं से पाया। सन् 1934-35 में बी.ए. किया और माखनलाल चतुर्वेदी से भेंट की। चतुर्वेदी जी का प्रभाव ऐसा पड़ा कि लिखना राष्ट्रीय जागरण का पर्याय बन गया। माखनलाल ने इनका नाम रखा, 'बाल मोहन' पर अपने निर्णय से उस नाम से मुक्ति पाई। "मैंने बहुत छोटी उम्र में लिखना शुरू कर दिया था और जो लिखना शुरू कर देता है वह समकालीन साहित्य को पढ़ता है। 'प्रभा' की फाइलें पढ़ डाली थीं और 'कर्मवीर' हमेशा पढ़ते थे। 'सरस्वती', 'चाँद', 'सुधा', 'माधुरी' और 'विशाल भारत' के अध्येता थे।"

30.2.2 रचनाकार-व्यक्तित्व

छायावादोत्तर कविता में भवानी प्रसाद मिश्र का नाम अपनी अलग राह और अलग काव्य-खोज, भावचेतना के कारण एक दम विशिष्ट है। "मुझ पर किन कवियों का प्रभाव पड़ा, यह भी एक प्रश्न है। किसी का नहीं। पुराने कवि मैंने कम पढ़े, नये कवि जो मैंने पढ़े मुझे जंचे नहीं। मैंने लिखना शुरू किया तब अगर श्री मैथिलीशरण गुप्त और सियाराम शरण गुप्त को छोड़ दें तो छायावादी कवियों की धूम थी। 'निराला', 'प्रसाद' और 'पन्त' फैशन में थे। मेरी कम्बख्ती (जिसे कहने में भी डर लगता है) ये तीनों ही बड़े कवि मुझे लकीरों में अच्छे लगते थे। किसी एक की भी एक पूरी कविता बहुत नहीं भा गई।" अंग्रेज़ी स्वच्छन्दतावाद के कवियों मे वर्ड्सवर्थ और ब्राडनिंग को खूब पढ़ा — इधर रवीन्द्रनाथ प्रिय कवि रहे। वाल्मीकि-कालिदास तथा भक्ति काल के सन्त कवियों में इनका मन रमा और यह प्रभाव इनके कवि कर्म पर साफ झांकता है। वर्ड्सवर्ड की एक बात उन्हें बहुत जँची कि "कविता की भाषा यथासंभव बोलचाल की भाषा हो।" यह आदर्श उन्होंने अपने रचना-कर्म में जीवन भर पालन किया है कि —

जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख,
और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख।

मिश्र जी को सन् 1943 ई. में तीन साल की जेल हुई। इसी बीच उन्होंने बंगला सीखी तथा बंगला साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अध्ययन किया। किन्तु वे भारतेन्दु, मैथिलीशरण, माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन और पं. रामनरेश त्रिपाठी की परंपरा के रचनाकार रहे हैं। फलतः ईश्वर और आध्यात्म के चक्कर में कभी नहीं पड़े। जो मूर्त और प्रत्यक्ष मानव है वही उनके सृजन का लक्ष्य है। कविता में वही लिखा जो उनके काव्यानुभव का विषय रहा। झूठी काव्य-गप्प से सदैव दूर रहे। उनके व्यक्तित्व पर नर्मदा और तप-तेज के प्रतीक परशुराम की परंपरा का गहरा प्रभाव पड़ा। किसी भी वाद, दर्शन या टैकनीक के प्रति आकर्षण नहीं रहा। "संकल्प यही रहा कि दर्शन में अद्वैत, वाद में गांधी और टैकनीक में सहज ही लक्ष्य मेरे बन जायें, यही कोशिश है।" भवानी भाई पत्रकारिता और कविता में गांधी-विचार दर्शन के जीवन भर श्रद्धावान व्याख्याता रहे। उन्होंने माखन लाल जी की एक बात गांठ बांध ली कि "तुम्हारा आसान लिखना छूट न जाए, इसकी सावधानी रखना। किन्तु यह भी ध्यान रखना कि आसान लिखना ध्येय नहीं है। ध्येय है लिखना, मन की बात, भीतर की बात, भीतर से भीतर की बात, और वह इस तरह कि वह न तो सूत्रबद्ध हो न भाष्य। जो मन में न समा सके, उसे वाणी तक लाओ। किन्तु जुबांदराजी मत करो। कलम को जीभ मत बनने देना।" इस संकल्प ने ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर चोट की और फ्रायड तथा मार्क्स के आंतक से मुक्त रखा। "गांधी के प्रेम, सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह को हर कीमत पर काव्याभिव्यक्ति दी और देशभक्ति के आंदोलनों को निर्भय वाणी। गरीब, किसान-मजदूर जनता के लिए जीवन भर संघर्ष किया और आपातकाल (इमर्जेन्सी) में सरकार की कटु आलोचना की। सच बात यह है कि भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य-व्यक्तित्व एक "खरे संत योद्धा" के काव्य-व्यक्तित्व का पर्याय रहा है। उनका निधन 20 फ्रवरी 1985 को नरसिंहपुर में हुआ।

30.2.3 कृतियाँ

मिश्र जी ने सन् 1930 ई. से काव्य-सृजन शुरू किया और तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में खूब छपते रहे। कवि रूप में उनकी ख्याति 1940 ई तक फैल गई पर एक साथ बहुत सी कविताएँ "दूसरा सप्तक" (1951 ई. सं. अज्ञेय) में छपी जिनको पर्याप्त आदर मिला। प्रथम काव्य-संग्रह "गीत फरोश" सन् 1956 ई. में प्रकाशित हो पाया। इस अकेले काव्य संकलन की कविताओं ने उनके कवि की धाक जमा दी। आधुनिक हिंदी कविता की विकास-यात्रा का यह संकलन एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। गांधी-विचार दर्शन से ओतप्रोत पाँच सौ कविताओं का संकलन "गांधी पचंशती"

के नाम से आया। "चकित है दुख", "अंधेरी कविताएँ", "बुनी हुई रस्सी", "व्यक्तिगत", "खुशबू के शिलालेख", "परिवर्तन जिए", "त्रिकाल संध्या", "अनाथ तुम आते हो", "इदं न मम", "शरीर कविता फसलें और फूल", "मान सरोवर दिन", "सम्प्रति", "तुकों के खेल" "नीली रेखा तक" तथा "तूस की आग" आदि अन्य प्रसिद्ध काव्य-संकलन हैं। इन्होंने एक प्रबंध काव्य की रचना भी की है। 'कालजयी' नामक यह प्रबंध कृति अशोक की कथा पर आधारित होने से ऐतिहासिक प्रबंध काव्यों की श्रेणी में आती है। इसमें ऐतिहासिक कथा के माध्यम से कवि ने प्रेम-अहिंसा के मानवीय मूल्यों की स्थापना की है।

भवानी प्रसाद मिश्र का सम्पूर्ण काव्य-सृजन मानवीय मूल्यों की विश्व-दृष्टि का अक्षय भण्डार है। देश और काल की सीमाओं को अतिक्रान्त करते हुए वे प्रगतिशील चेतना के तेजस्वी रचनाकार हैं। "कवि" शीर्षक कविता में उन्होंने कहा है "कलम अपनी साथ/और मन की बात बिल्कुल ठीक कह एकाध/यह कि तेरी भर न हो तो कह/और बहते बने सादे ढंग से तो बह/" कहना न होगा कि अन्याय और अत्याचार के सक्रिय विरोध में खड़े इस कवि की वाणी में तलवार से ज्यादा पैनी धार है।

बोध प्रश्न 1

1 भवानी प्रसाद मिश्र के जीवन का पाँच पंक्तियों में परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2 भवानी प्रसाद मिश्र के रचनाकार-व्यक्तित्व की दो विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

3 सही √ गलत × पर निशान लगाइये।

भवानी प्रसाद मिश्र के प्रबंध काव्य का नाम —

i) गीत फरोश ( )

ii) कालजयी ( )

iii) नीली रेखा तक ( )

iv) तूस की आग ( )

4 भवानी प्रसाद मिश्र की रचनाओं की सृजन-दृष्टि पर तीन पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

30.3 काव्य संवेदना

30.3.1 काव्यानुभूति

मिश्र जी चिंतन को अनुभूति में फेंटकर प्रस्तुत करने में दक्ष हैं। नतीजा यह है कि उनकी आत्माभिव्यक्ति में भाव उष्मा के साथ आत्म-विस्तार और आत्म-परिष्कार के तत्व प्रधान रहते हैं। मूलतः उनकी काव्य संवेदना में गांधी-विचार दर्शन के मूलाधारों का विस्फोट है और यह विस्फोट गीतात्मक है। नयी कविता में वे एक मात्र ऐसे कवि हैं जिनकी काव्यानुभूति में किसान, मजदूर, बच्चे और नारी इन सभी की समस्याओं का दर्द मूल संवेदना में जज्ब होकर सहजता से बोलता है। उन्होंने अपनी काव्यानुभूति का संस्कार स्वाधीनता आंदोलन की मुक्ति चेतना से किया है। अंग्रेज और अंग्रेजियत, पूँजीवाद और उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और रूसी साम्यवाद सभी पर चोट की है। उनका कथन है "मैंने अपनी कविता में प्रायः वही लिखा है जो मेरी ठीक पकड़ में आ गया है। दूर की कौड़ी लाने की महत्वाकांक्षा भी मैंने कभी नहीं की।" बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुःख मैंने इनमें कहे हैं जिनका एक भी शब्द किसी को समझाना नहीं पड़ता

— "शब्द टप-टप टपकते है फूल से/सही हो जाते हैं मेरी भूल से"। लोकजीवन की खरी संवेदना ही उनकी काव्य-वस्तु का मूलाधार है। काव्यानुभूति में लोक-वेदना का यही संसार घुमड़ता रहता है जैसे —

तंग गलियों में कहीं बच्चे खड़े हैं
लाल हैं पर भाग पत्थर से अड़े हैं
धूल के हीरे नहीं अब धूल हैं ये
फूल जंगल के नहीं अब शूल हैं ये।

यह काव्यानुभूति उस व्यवस्था और सत्ता की विसंगतियों पर व्यंग्य करती है जिसमें बच्चे तक दरिद्रता में मर रहे हैं उनका बचपन सिसक रहा है 'हाय रे बचपन तलक सुख से न बीता, वाह रे, दरिद्र तूने खूब लूटा।'

उन्होंने झोपड़ी और महलों की लड़ाई को समझते हुए लिखा है कि यदि झोपड़ी मिटेगी तो महल भी नहीं बचेगा —

एक दिन होगी प्रलय भी
मत रहेगी झोपड़ी मिट जायेगा नीलम निलय भी।

पूँजीपतियों, मुनाफाखोरों, देशद्रोहियों के खून सने जबड़ों की उन्हें सच्ची पहचान है। इसलिए उनकी काव्यानुभूति का दर्द सच्चा है। व्यंग्य और वक्रोक्ति से कवि मन खौलता मिलता है —

आप सभ्य हैं क्योंकि धान से भरी आपकी कोठी
आप सभ्य है कि क्योंकि वक्त पर कटवा देते बोटी।

उनके गांधी-दर्शन की काव्यानुभूति में हर सत्य को निर्भयता से कहने की गजब की ताकत है। 'आपात काल' के दिनों में वे 'त्रिकाल सन्ध्या' लिखते हैं और सत्ता के क्रूर चरित्र को उधेड़कर रख देते हैं। नयी कविता में उनकी काव्यानुभूति का तेवर कबीरनुमा रहा है। बैनों के बान मारकर वे हर जोखिम झेलने की तैयारी करते हैं।

उनकी काव्यानुभूति में प्रकृति की लय है। भारतीय जीवन की सन्त-लय ने उनकी कविताओं में स्थान पाया है। "गीत फरोश", "सतपुड़ा के जंगल", "सन्नाटा", "शब्दों के तल्प पर", "घर की याद", "त्रिकाल सन्ध्या", "नीली रेखा तक", "तूस की आग" आदि उनकी ऐसी ही श्रेष्ठ कविताएं हैं। उनकी काव्य-यात्रा अंत तक गांधी जी के विचारों का काव्यानुवाद करती रही। हालांकि आजादी के बाद की निराशा, लूट का अंधेरा उनकी काव्यानुभूति में दर्द बनकर बना रहा है। किन्तु इस काव्यानुभूति में अस्तित्ववादी दर्शन की वह अनास्थावादी दृष्टि नहीं है जिससे नयी कविता के अधिकांश कवि समझौता किए रहे हैं। वे मानवीयता और अखंड आस्था के भारतीय कवि हैं। इसलिए उनकी काव्यानुभूति में भारतीय लोक जागरण की परंपरा बिजली-सी कौंध रही है। अहिंसा की प्रेम धारा का पवित्र जल इस काव्यानुभूति को सींच कर शक्ति देता रहा है। यहाँ कविता में नर्मदा का परशुराम तेज तपड़ता है और कविता का स्रोत सतपुड़ा की कठोर चट्टानों को फोड़कर उमड़ पड़ता है।

भवानी प्रसाद मिश्र भावाडम्बर, बौद्धिक दुरूहता और व्यक्तिवादी चिंतन के रचनाकार नहीं हैं। बृहत्तर मानव समाज से कटने वाली अनुभूति का उनके लिए कोई मूल्य नहीं है।

30.3.2 कविता की मूल्य दृष्टि

उनकी कविता का प्रधान मूल्य है मानव की मुक्ति, शोषण मुक्त सामाजिकता, गंवई संवेदना की भावभूमि का खरापन, सन्त-भाव की करुणा और गांधी-विचार दृष्टि की मूल्य चेतना। इन जीवन मूल्यों को उन्होंने जूझकर कमाया है। इन्हीं मूल्यों की रक्षा के लिए उन्होंने अंग्रेज पर चोट की है और सत्ता के साँड़ों को काबू में करने वाली नकेल डालनी चाही है। जन के सम्बोधन और प्रश्नाकुलता इस काव्यात्मकता में बहुत है और यह इस बात का प्रमाण है कि वे सामाजिकता की व्यापक भूमि पर कविता को रचते हैं। उन्होंने बार-बार दुहराया है —

सच कहो कवि आत्मा से पूछकर
सच कहो कवि मन किसी का भय करो।

यहाँ "आत्मा" शब्द से डरने की जरूरत नहीं है। भारतीय दर्शन का यह शब्द यहाँ अन्तर्मन के अर्थ में आया है — आत्मा के दार्शनिक चिंतन-प्रपंच को लेकर नहीं। उनकी कविताओं में गाँव की गरीबी और खेतिहर किसान की पीड़ा है। फिर भी कहा यही है —

सहो
और बेहतर बातों के लिए
रहो।

उनके काव्य के मूल्य, गांधी-विचार दर्शन में घुले खादी के मूल्य हैं। एक प्रकार से यह खादी की कविता है जिसमें एक संस्कृति का इतिहास बोलता है। वे भोले कवि हैं पर शंकर का क्रोध उनमें रंग दिखा देता है। इसलिए उनके काव्य के बोलों का असरदार हाशिया है —

और न जाने क्या-क्या बोला। पिछले साल भवानी भोला।

इस कविता के स्वाधीनता परक मूल्य दृष्टि और प्रेरणा-शक्ति पर माखन लाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी और बालक कृष्ण शर्मा नवीन तीनों की छाप है। उन्होंने नए मानव की हर बात कही है पर ऐसे सांचे में ढालकर कि उसके भीतर

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता का सांचा छोटा पड़ा है। फलतः कविताओं में उनका बल "नयी" पर कम "कविता" पर ज्यादा है। वे कहते रहे हैं —

अगर गा न पाये तो हल्ला करेंगे
इस हल्ले में मौत आ गई तो मरेंगे।

(गांधी पंचशती)

जन-जीवन का हर कोना वे छानते हैं, हर आंख के आंसू पर उनकी दृष्टि अटकी है और सत्ता की हर हरकत पर उनकी लेखनी तलवार की तरह चली है।

30.3.3 मानव और प्रकृति

इस कविता के सौन्दर्य संसार में मानव तथा प्रकृति दो नहीं हैं — दोनों में अद्वैत है। यही उनके चिंतन का काव्यात्मक अद्वैतवाद है। वे नदी की तरह बहना, फूल की तरह खिलना, धूप की तरह फैलना चाहते हैं। विन्ध्य पर्वत और नर्मदा के वन उनमें विस्तार पाए हुए हैं। मध्य प्रदेश की आदिम जातियाँ जिन वनों में रहती हैं उन सतपुड़ा के वनों में उनकी दृष्टि का प्रवेश है। फलतः जन-मन से एकाकार होकर ही इस कविता में शक्ति आई है —

वे ऐसा गाँव देखते रहे हैं —

गांव जिसमें झोपड़ी है घर नहीं है
झोपड़ी की फटकियाँ हैं दर नहीं है,
धूल उठती है, धुएं से दम घुटा है
मानवों के हाथ से मानव लुटा है।

पर इस कविता में जो मनुष्य परिभाषित हुआ है वह एकदम मस्त, निर्भय और श्रमी आदमी है।

भवानी भाई के काव्य में प्रकृति की संवेदना का विस्तार है। फूल-पत्ते, नदी, मैदान, पर्वत, लताएँ, जंगल, खेत, पशु-पक्षी यह सब मिल कर बनाते हैं उनका काव्य संसार। कालिदास का मन इस कवि में नए ढंग से खुलता है। मेघ, बूंद, धूप सबके साथ उनका सौन्दर्य बोध तदाकार है। आधुनिक भाव-बोध के इस कवि के लिए यह एक आंतरिक जरूरत थी कि वह प्रकृति की मुक्तता में अपनी वैयक्तिक स्वाधीनता और सामाजिक स्वाधीनता की खोज करे। इस मुक्ता-कांक्षी कवि के लिए प्रकृति की स्वच्छन्दता का आकर्षक इसलिए भी था कि वह रूढ़ियों को तोड़कर चैन से जीवन जी सके। इसलिए भवानी भाई ने अपने प्रकृति-प्रेम को देश प्रेम में एकाकार कर दिया है। इस प्रेम का आत्म प्रसाद देश में मनुष्य, नदी, पर्वत, निर्झर, सरोवर, फूल, पत्ते, लता गुल्म, पशु-पक्षी सभी तक है। भवानी प्रसाद मिश्र मानते हैं कि फूल हमारे वनस्पति जगत् की संवेदनात्मक पहचान हैं। प्रकृति सृजन के लिए पतझड़ के बाद नव पल्लवन करती है। पल्लवों में फूल और फल आते हैं। मूल बात यह है कि हमारी सांस्कृतिक अवधारणा में पेड़-पौधे कई अर्थों में मनुष्य के समान हैं। पुराने पत्तों का झर जाना जीर्ण संस्कारों से मुक्ति पाना है। पुनः नये पत्तों का आना नए जीवन का उदित होना है। पूजा में नए पत्तों और फूलों का महत्व इसीलिए अधिक है कि हम प्रकृति सुन्दरी के मनोभाव को व्यक्त करते हैं। केवल फूल ही चढ़ा दें तो पूरी पूजा सम्पन्न हो जाती है। आगम परंपरा मानती हैं कि फूल आकाशतत्व है — फूल चढ़ाकर हम अपने लघु अस्तित्व को किसी महत्तर के प्रति अर्पित कर देते हैं। भवानी भाई अपनी कविता में इस प्रकृति सन्दर्भ को जगह-जगह अभिव्यक्ति देते हैं —

फूल लाया हूँ कमल के क्या करूँ इनका
पसारें आप आंचल छोड़ दूं हो जाए जी हलका।

भारतीय कविता का प्रसिद्ध उपमान है — कमल का फूल। यहाँ तक कि हमारे देवी-देवता कमल नयन, राजीव लोचन, कमलासन, करकमल, और पदकमल हैं। उनके मुख में कमल की गंध हैं, आँखों में कमल का रंग और आकार, हाथ में कमल की जागरूकता और चरणों में कमल की गति है। कमल में भक्तियोग, ज्ञान योग, कर्मयोग तीनों का एकांतवास है। साधना से साधक कमल को हृदय में खिलाता है। पार्वती के हाथ में लीला कमल है। पूजा में घट जाने पर कमल ही राम का दक्षिण नयन है। विष्णु की दाहिनी आँख सूर्य है। कमल सूर्य से खिलता है। मूल बात यह है कि हमारी जातीय चेतना कमल से पड़ी है। यहां तक कि प्रत्येक ऋतु का एक अलग फूल है, शरद का कमल हैं वसन्त का कुरबक। इन सभी फूल प्रतीकों में हमारी सौन्दर्य बोध की अवधारणा के बीच-भाव मौजूद हैं। स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में फूल के साथ उत्सर्ग और अर्पण का देशभक्ति भाव जुड़ गया। भारतेन्दु, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी की इसी भाव परंपरा में भवानी प्रसाद मिश्र के प्रकृति प्रेम को देखा जा सकता है। विशेष बात यह है कि मिश्र जी की कविता में कालिदास की तरह जल बहुत है, जल के प्रतीक अनेक हैं। यहाँ नर्मदा का जल भीतर के तप का प्रवाह है।

नदी का भारतीय संस्कृति में गुणगान बहुत है। संस्कृति में इसका महत्व क्यों है? कारण, नदी हमारी पूरी जीवन प्रणाली रही है। नदियां ही नाड़ी हैं जो भौगोलिक एकता को बनाए रखती हैं। नदियों का जल हमारी समष्टि चेतना का अविरल प्रवाह है। फिर भवानी भाई के काव्य की प्रेरणा की नदी नर्मदा है। नर्मदा क्वारी नदी है, इसलिए बहुत प्रबल है और अनियन्त्रित भी। फिर यह गंगा से विपरीत दिशा में बहती है। नर्मदा, क्रोध, तप और टकराव की धारा है। नर्मदा का इतिहास परशुराम से जुड़ा है। इसी नदी की चोट से पत्थर शंकर हो गए। इसके रोड़ों से ओंकारेश्वर बनाए गए। यदि हम नर्मदा की उपेक्षा करेंगे तो हमारी प्रवाह धर्मी संस्कृति के मूल्य चुक जायेंगे हमारा सांस्कृतिक मन बीमार और विकृत

हो जायेगा। इसलिए भवानी प्रसाद के काव्य में आने वाली नदी नर्मदा का अर्थ विस्तृत है और गहरा भी। नर्मदा नदी के इस भावार्थ की उपेक्षा करने पर हम भवानी प्रसाद मिश्र के काव्यार्थ को नहीं समझ सकते हैं। क्योंकि उनकी कवि मानसिकता का निर्माण इसी नदी की भावभूमि ने किया है।

भवानी प्रसाद मिश्र का प्रकृति के प्रति विशेष लगाव रखना व्यक्तिगत स्वच्छन्दता की आकांक्षा का तो प्रतीक है ही, वह मानव की प्रकृत स्वाधीनता का भी संदेश रूप है। मिश्र जी का प्रकृति सौन्दर्य की महिमा का गान करना, प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता मानना वाल्मीकि-कालिदास की परंपरा का प्रभाव भी है। स्वयं रवीन्द्रनाथ को नया आलोक-प्रकृति से ही मिला था। भवानी भाई पर रवीन्द्रनाथ की "निझिर स्वप्न भंग" कविता का असर दूर तक मिलता है, रवीन्द्र उनके प्रिय कवि थे। निराला का "बादल राग" केदारनाथ अग्रवाल की कविता "घन गरजे जन गरजे" की धमक भी भवानी की काव्य-चेतना पर सीधी छाप छोड़ती रही है। विन्ध्यांचल, सतपुड़ा का परिवेश उनमें रचा पचा है और इसे उनका काव्य विविध रूपों में चित्रित करता रहा है।

30.3.4 जन जीवन के संघर्षों की वाणी

मूलतः भवानी प्रसाद मिश्र गांव की संवेदना के कवि हैं। जन जीवन की विषमताओं विडंम्बनाओं और विसंगतियों को वे वाणी देते हैं। उनके गांधीवादी स्वर में साम्यवादी आक्रोश शुरू से ही रहा है। यदि श्रमिक के श्रम को हड़पने का यह लूटतन्त्र चलता रहा तो जनक्रांति हो जायेगी। "दूसरा सप्तक" में "प्रलय" कविता इसी मनोभूमिका को व्यक्त करती है —

एक दिन होगी प्रलय भी
मत रहेगी झोपड़ी,
मिट जायेंगे, नीलम निलय भी।

यदि श्रम का सही बंटवारा न हुआ तो हिमालय की बर्फ से आग फूट पड़ेगी। बर्फीली सतह अन्यायी का खून पीकर लाल हो जाएगी और

काल होगी तारिणी गंगा
तरणिजा व्याल होगी,
और शिव होंगे न शंकर
कंठगत जय माल होगी
कर न पायेगा हमें आश्वस्त
जननी का अभय भी।
एक दिन होगी प्रलय भी।

भारत में आजादी के सूर्य के उदित होने के बाद भी गाँव में अंधेरा है। छोटे-बच्चे अभाव और भूख, अशिक्षा और शोषण में बर्बाद हो रहे हैं। खेतिहर किसान-मजदूर फसलों को उगाकर भी भूखा है। थोड़े से सफेद पोश लोग रंग, भाषा, नस्ल, जाति और व्यवस्था के साम्राज्यवादी हितों को पालकर भोग रहे हैं शोषण के साँप की जीभ बढ़ती ही जाती है — उसका कोई अन्त नहीं है। इस गरीब जनता की व्यथा के लिए मिश्र जी की कविता में व्याप्त मानववाद एक मूल्यवान जीवन दृष्टि है। भारत के आपातकाल के दिनों में वे "त्रिकाल सन्ध्या" की कविताएँ लिखते हैं और सत्ता के जुल्म-जोर को खुली चुनौती देते हैं। सत्ता हथिया कर जो सभ्यता-संस्कृति और शांति का नारा लगाता है, जनता को गुमराह करता है — यह कविता उसके विरोध में खड़ी होती है। माखनलाल से भवानी प्रसाद ने यही सीखा है कि वे देश और जनता के लिए सत्ता को खुली चुनौती देते हैं और उनकी कविता अन्याय के प्रति एक तेज ललकार बन जाती है। उनकी कविता में झूठी करुणा का नाटक नहीं है उसमें कवि का युग संघर्ष बोलता है।

30.3.5 विसंगति और विडम्बना

भवानी भाई की सर्जनात्मकता में विद्यमान विसंगति और विडम्बना को लेकर नयी कविता के कवि आलोचक अज्ञेय जी ने लिखा है कि वे गंभीर से गंभीर बात को निहायत सरल, सादा, स्पष्ट और गंभीर ढंग से कहने की कला में दक्ष हैं। गंभीर विषय को वस्तु बनाते समय उन्हें प्रयास नहीं करना पड़ता। जैसे डाली पर फूल खिलता है वैसी ही उनकी कविता प्रकृत भाव-भूमि से उपजाती है। व्यंग्य और वक्रोक्ति की पैनी धार का भरपूर वार भी वे काफी सधे हाथों से करते हैं। उनकी कला का यह आदर्श "गीत फरोश" कविता में देखा जा सकता है। इस कविता को लेकर अज्ञेय जी ने लिखा "मैं इस बात को कुछ दूसरे ढंग से कहूँ? नाटकीयता तो खैर इसमें है, पर असल विशेषता यह है कि इसकी गंभीर बातों को हल्के ढंग से कहा गया है। नयी कविता में यह भी है और इससे ठीक उल्टा भी है, बहुत हल्की बात को गंभीरता से कहना या कम से कम चमत्कारपूर्वक कहना या कह लीजिए छोटी बात में से चमत्कार खोज लेना। बल्कि उसका एक सिद्धांत यह हो सकता है कि छोटी बात कोई है ही नहीं। उसे देखने में ही सारा चमत्कार निहित है।" (आधुनिक साहित्य : एक परिदृश्य पृ. 152) विषय को प्रस्तुत करने की अदा तो "गीत फरोश" में है पर कविता पूरी तरह विषयवस्तु पर ही केन्द्रित है रूप का चमत्कारी रूझान उसमें नहीं है। इस बात को "कविता के नए प्रतिमान" (पृ. 165) में नामवर सिंह ने स्वीकार करते हुए कहा है कि "इसका कवित्व एक गंभीर बात को निहायत अगंभीर ढंग से कहने में है और यह अगंभीरता कविता के स्वर (टोन) में है।" गंभीरता के आडम्बर में भवानी भाई काव्यात्मकता को गायब नहीं करते। ज्ञान उनके लिए बोझ नहीं है, सहज प्राप्त सम्प्रेषण है। नई कविता में विसंगति-विडम्बना के

दृश्य दिखाने के लिए सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा, विजयदेव नारायण साही, शमशेर और केदारनाथ सिंह इस तकनीक का प्रायः प्रयोग करते रहे हैं और इन सभी को इन प्रयोगों में सफलता मिली है। नितांत भिन्न और असम्बद्ध समझी जाने वाली वस्तुओं का ये कवि सफल ढंग से संयोजन कर देते हैं और एक नया अर्थ-सूर्य निकल पड़ता है। हिंदी के ये कवि क्रीड़ा-कौशल का खूब और अनेक रूपों मुद्राओं, स्थितियों, प्रकरणों, मिथकों, में उपयोग कर लेते हैं। पर इन सभी में सामंजस्य से ज्यादा द्वंद्व है और तनाव का भीतरी परिवेश। इसलिए यह कविता एक नयी मनः स्थिति का जटिल बिंब है — एक नए राग संबंध का नया उद्घाटन। किन्तु भवानी प्रसाद की ईमानदारी यह है कि वे दूर की कौड़ी लाने के लिए नहीं भटकते। उन पर पश्चिम का ऋण नहीं है और वे अस्तित्वादी अनुभूति को पास नहीं फटकने देते। उनकी अनुभूति की प्रामाणिकता भारतीय परंपरा के मूल स्त्रोतों से जुड़कर ही सिद्धि पाती है।

30.3.6 जीवन दर्शन

वास्तव में मिश्र जी का जीवन दर्शन गांधी-विचार दर्शन पर केन्द्रित है। जीवन के छिछले-हल्के विकृत बाह्य भौतिकवादी मूल्य उनकी कविदृष्टि को परितोष नहीं दे पाते। गांधी पर लिखीं अपनी अनेक कविताओं में उन्होंने साम्यवादी मित्रों को संबोधित करते हुए कहा है कि गांधी-विचार दर्शन को प्रतिगामी दृष्टि घोषित करना अपनी सांस्कृतिक परंपरा से ही मुँह फेर लेना है। कारण, गांधी-विचार दर्शन में हमारी सन्त-परंपरा कबीर, नानक, रैदास, तुलसी का विचार प्रदीप्त है। हमारे स्वाधीनता संग्राम के अन्तिम दौर ने भी यही सिद्ध किया है कि गांधी ही भारत की गरीब जनता के सच्चे जननायक थे और उन्होंने एक खास ढंग से जनता को संगठित करके ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पैर उखाड़ दिए। गांधी ने जाति, धर्म, सम्प्रदाय, रंग, वर्ग, वर्ण आदि से ऊपर उठकर जन आकांक्षाओं को साकार किया और हमारे इतिहास की दिशा बदल दी। उन्होंने सिद्ध किया कि अहिंसा, प्रेम और सत्याग्रह में जो ताकत है उसके सामने हिंसा, तोप, तलवार, बम की शक्ति तुच्छ है। गांधी आधुनिक भारत की मुक्ति और लोकमंगल की सिद्धि हैं। हमारा दुर्भाग्य यह रहा है कि हमने अपनी हर चीज को तुच्छ मानकर पश्चिम का मुँह ताका है और अपनी सभी समस्याओं का हल पश्चिम से माँगा है। पर पश्चिम हमारी समस्याओं का हल नहीं दे सकता। क्योंकि हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ पश्चिम से भिन्न है। अपने इतिहास के हाशिए में ही हम अपनी समस्याएँ हल कर सकते हैं। मिश्र जी ने बराबर कहा है —

लेकर समूची मानवता की परम्परा में
अब तक के सबसे सीधे-सादे निर्भय और स्नेही आदमी
गांधी का नाम।

उनका प्रबंध काव्य "कालजयी" अशोक की ऐतिहासिक कथा के माध्यम से गांधी-विचार दर्शन की महत्व-प्रतिष्ठा करता है। सच बात यह है कि नयी कविता की मध्यवर्ती अन्तर्धारा में गांधी विचार प्रवाह से जो काव्यात्मक तेज उत्पन्न हुआ है उसकी सबसे अधिक विश्वसनीय अभिव्यक्ति मिश्र जी के काव्य में हुई है। गांधी विचार-चेतना के वे नयी कविता में प्रतिनिधि कवि हैं।

बोध प्रश्न 2

1 भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यानुभूति पर विचार कीजिए। अपना उत्तर आठ पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2 भवानी प्रसाद मिश्र की कविता की मूल्य-दृष्टि की चर्चा तीन पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

3 मिश्रजी के काव्य को ध्यान में रखते हुए मानव एवं प्रकृति के रिश्ते पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4 भवानी प्रसाद मिश्र का कवि जन-जीवन के संघर्षों को किस रूप में व्यक्त करता है? चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

5 भवानी प्रसाद मिश्र की जीवन-दृष्टि पर सही √ गलत × का निशान लगाकर बताइये कि किस विचारधारा का प्रभाव है?

1) समाजवाद ( )

2) मार्क्सवाद ( )

3) गांधी विचार दर्शन ( )

4) अस्तित्ववाद ( )

30.4 काव्य-शिल्प

भवानी प्रसाद मिश्र को चमत्कृत करने वाले कृत्रिम काव्य-शिल्प का मोह नहीं है। उनकी नैसर्गिक प्रतिभा में सर्जनात्मकता सहज-स्वच्छ रूप में निखार पाती है। उनके काव्य का मुहावरा किसी भी पूर्ववर्ती या समकालीन कवि का न तो अनुकरण है न मेल खाता है। उन्होंने कविता को आम आदमी का संवाद बनाया है, उसमें बोली की लय का संगीतात्मक राग बजता है। उनके कहने की अदा एकदम मौलिक, अद्वितीय और सहज स्फूर्त है। उनके "अंदाजे बयां और" में व्यंग्य और कथन भंगिमा की विचित्रता का विशेष महत्व है और उनकी काव्य शैली नितांत उनकी है जिसे एक काव्य पंक्ति से पहचाना जा सकता है — वे लीक पर कभी नहीं चलते। यथा

नये ठाठ से नई राह पर कदम धर दिया है
खाहमख्वाह टहलना हमने बंद कर दिया है।

सन्नाटा, गिरगिट, साँप, खण्डहर, पहाड़, मैदान सभी का अंतरंग स्पर्श वे कर सकते हैं। वे "सन्नाटा" और "खण्डहर" पर भी नजे से कविता लिख सकते हैं —

मैं सन्नाटा हूँ फिर भी बोल रहा हूँ
मैं शांत बहुत हूँ फिर भी डोल रहा हूँ।

सपाट बयानी को कविता बना देना चुनौती होता है पर भवानी भाई उसे कविता बना देने में सक्षम रहे हैं। "सतपुड़ा के जंगल" कविता में उनकी यही वर्णन शक्ति काम करती है —

उतर कर बहते अनेकों, कल कथा कहते अनेकों,
नदी, निर्झर और नाले, इन वनों ने गोद पाले।
लाख पंछी सौ हिरन दल चाँद के कितने किरन दल
झूमते वन फूल फलियाँ, खिल रही अज्ञात कलियां।

इस काव्य-शिल्प की सपाट बयानी में प्रयोग के स्तर पर विशेष बात यह है कि कवि भाव-भूमि पर प्रकृत-चित्रण, लोक-गीतों का प्रयोग और प्रचलित लोक-धुनों की ओर विशेष झुकाव रखता है। यह उसकी महत्वपूर्ण प्रवृत्तिगत उपलब्धि भी कही जा सकती है, उदाहरणार्थ —

पीके फूटे आज प्यार से पानी बरसा री।
हरियाली छा गई, हमारे सावन सरसा री।
फर-फर उड़ी फुहार अलक हल मोती छाये री।
खड़ी खेत के बीच किसानिन कजरी गाए री।
झर झर झरना झरे, आज मन प्राण सिहाये री।
कौन जन्म के पुण्य कि ऐसे शुभ दिन आए री।

(मंगल वर्षा)

लोकमन की भावुक संवेदना से कविता में रचने वाला उनका शिल्प ऐसा है कि उसे आसानी से किसी "वाद" के चौखटे में फिटकर पाना मुश्किल काम है। उन्होंने लगातार अपने युग संघर्ष की बात कही है पर सांचों को तोड़कर ही लिखा है।

30.4.1 काव्य-रूप

प्रबंध और मुक्तक दोनों काव्य रूपों के प्रचलित साँचे को तोड़कर उन्होंने अपना नया-काव्य साँचा निर्मित किया है। इसमें लोक शैली के गायन और संवाद के रूप मिलते हैं। सहज बयानी में वे उर्दू की कोई भी शैली उठा सकते हैं— उनकी रचना बातचीत की लय में बन जाती है —

दर्द जब घिरे बहाना करो
नाना ना, ना ना ना ना करो
हँसो खेलो, मस्ती के संग
दर्द को लगे कि यह क्या ढंग?
दर्द भीतर हैरान रहे
ओठ पर अपने गान रहे

भवानी लोक गीतों के रूप में सामूहिक प्रार्थनाएँ लिखते हैं। स्वाधीनता आंदोलन की निर्भय भाव भरी प्रभात फेरिया. गाते हैं —

अगर गा न पाये तो हल्ला करेंगे
इस हल्ले में मौत आ गई तो मरेंगे।

लोक गीत और प्रगीत दोनों ही भवानी भाई की कलम से नया संस्कार पा कर, मंजते और चमक उठते हैं। उनकी कविताएँ माली की कैंची से काटकर नहीं संवारी गई हैं — न वे कटे-छटे कला गीत हैं। वन-पर्वत पहाड़ खण्डहर, नदी की कछारों में अपने आप उगने वाले पेड़-पौधों लताओं की भांति वे जन्में हैं — वन्य-सौन्दर्य की अकृत्रिम आभा ही इन गीतों का राग रंग है। "गीत फरोश", "त्रिकाल सन्ध्या", "तूस की आग", "नीली रेखा तक" जैसे संग्रहों में ऐसे अनेक गीत हैं।

नयी कविता में कथात्मक प्रबंध को तोड़कर लम्बी कविता लिखने का चलन हुआ। भवानी प्रसाद मिश्र ने "शब्दों के तल्पपर", "सतपुड़ा के जंगल", "नीली रेखा तक", "जिंदगी की धारा में", "जलवा चीजों का" जैसी लम्बी विचार कविताएँ लिखीं हैं। मूलतः यह कविताएँ नाटकीय एकालाप हैं — जिनमें संरचनात्मक अन्विति की अन्तर्योजना है।

छोटे-छोटे भाव-गीत लिखने में भवानी भाई का मन बहुत रमता है। उन्हें तनकर कहने में दिलचस्पी रहती है —

सहो
और बेहतर बातों के लिए
रहो।

उनका एक मात्र प्रबंध काव्य है — "कालजयी"। इसे अशोक की कथा पर आधारित ऐतिहासिक काव्य या खण्ड काव्य भी कहा जा सकता है। किन्तु इसमें पुराने प्रबंध की क्रमबद्ध कड़ियाँ तोड़ दी गई हैं। नतीजा यह हुआ है कि इसे भी परंपरागत प्रबंध काव्य नहीं कहा जा सकता है।

कवि की मूल प्रतिज्ञा यह रही है कि वह काव्यरूपों को लेकर लकीर का फकीर नहीं बनना चाहता। फलतः वह अनेक प्रकार के लोक-रूपों और लयों से काव्य का ठाठ खड़ा करता है।

30.4.2 काव्य-भाषा और सर्जनात्मकता

अज्ञेय जी का यह कथन भवानी प्रसाद मिश्र की कविता पर एकदम खरा सिद्ध होता है कि "काव्य सबसे पहले शब्द है। और सबसे अन्त में भी यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। सारे कवि धर्म इसी परिभाषा से निःसृत होते हैं। शब्द का ज्ञान — शब्द की अर्थवत्ता की सही पकड़ ही कृतिकार को कृती बनाता है। ध्वनि, लय, छंद आदि के सभी प्रश्न इसी में से निकलते हैं और इसी में विलय होते हैं। इतना ही नहीं सारे सामाजिक संदर्भ भी यहीं से निकलते हैं।" (सीढ़ियों पर धूप की भूमिका) ध्यान देने की बात है कि भवानी प्रसाद मिश्र ने शब्द — साधना को हर कीमत पर बनाये रखा है — उनकी प्रतिज्ञा रही है —

शब्दों का सही उपयोग योग है
और कल्याणकारी है योग की तरह
शब्द का मनमाना उपयोग भोग है
और विनाशकारी है भोग की तरह।

कहना न होगा कि शब्द की आत्मा और ध्वनि की सही पकड़ को लेकर ही भवानी ने सृजन कर्म किया है। उनके शब्दों ने अपनी ताकत से 'नाराज अंग्रेज' पर चोट की है और धूप-पानी-तूफान को आराम से झेला है —

वाणी को बुनने में
कंकर के चुनने में
× × ×
केवल स्वभाव है
चुनने का चाव है।

मिश्र जी के काव्यकथन उनकी काव्य-भाषा की विशेषताएँ स्वतः कह देते हैं

(1) अभी बैन
अभी बान
अभी बानों के सिलसिले

(2) याने मैं और मेरे शब्द
अलग-अलग नहीं हैं
एक हैं।
मैं सिर्फ उन्हें बरतूँ नहीं
उन्हें जिऊँ—

(3) कलम अपनी साथ
और मन की बात बिल्कुल ठीक कह एकाध
जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख।
और इसके बाद भी हम से बड़ा तू दिख।
चीज़ ऐसी दे कि जिसका स्वाद सिर चढ़ जाए
बीज ऐसा बो कि जिसकी बेल बन बढ़ जाए।
फल लगें ऐसे कि सुख रस, सार और समर्थ
प्राण संचारी कि शोभा भर न जिसका अर्थ।

(4) सवाल यह है कि जो आग छिपी है
शब्दों में उसे हम इस अंधेरी रात में
सुलगा सकते हैं कि नहीं।

भवानी प्रसाद मिश्र शब्दों की कुटिया में ऐसे समाधिस्थ रहे हैं कि उनकी चार दशकों की रचना यात्रा ने शब्दों में भावों की लपट उठा दी है। उनकी काव्य-भाषा में एक ऐसी सर्जनशीलता उत्पन्न हुई है कि वह शब्द-ब्रह्म की भारतीय अवधारणा को साकार करती है। उनकी काव्य-भाषा सबसे पहले एक आत्मीय संवाद है, बातचीत का भरासेमंद तरीका है, एक ऐसी शैली है जिसका लहजा केवल उनका है। "बुनी हुई रस्सी" (1971 ई.) की भूमिका में उन्होंने लिखा है "लिखने में आविष्कार मेरा बोलना है। मैं जो लिखता हूँ उसे जब बोलकर देखता हूँ और बोली उसमें बजती नहीं है तो मैं पंक्तियों को हिलाता डुलाता हूँ। बोलचाल की हिंदी ही मेरी ताकत है।" वास्तविकता यह है कि बोलचाल की इस ताकत का वे पूरी कवि शक्ति से उपयोग करते हैं। उनकी भाव मुद्रा कभी सम्बोधन की है, कभी प्रश्नकुलता की है, कभी बच्चे सी भोली सहजता भरी है कभी व्यंग्य की चुटकी है, वक्रोक्ति की चोट है। कभी मजाक में भी गहरी अर्थध्वनि की मार है। यह काव्य-भाषा गद्यभाषा के एकदम निकट है "जी हाँ! हुजूर", "यानि कि", "देखो", "बोली", "करो", "चाहिए" जैसे प्रयोगों की कविता के बीच में सीधी उपस्थिति है। भाषा में अमूर्त को मूर्त करने की सृजन शक्ति है। नाटकीयता, सपाटबयानी, कथन का बांकपन और एक व्यापक आत्मीयता से यह काव्य-भाषा निर्मित है। उनके वाक्य कभी शेर की अदा में पूँछ उठाकर चलते हैं, कभी हिरन सी छलांग मारते हैं, कभी बिल्ली की भाँति चुपके-चुपके सधे पावों शिकार पकड़ते हैं, कभी नर्मदा की धार की तरह गति पाते हैं, कभी कमल की तरह खिल जाते हैं। इसलिए उनकी कविताएँ पढ़ने से ज्यादा सुनने-गाने में मजा देती है। बोलचाल की भाषा में गहन-गंभीर बात कह जाना उनका काव्य-भाषा की प्रमुख विशेषता है। छायावाद के कवियों के पास भाषा का यह सहज संसार न था पर प्रगतिवाद के पास सहजता के नाम पर एक ईमानदार संकल्प था। इसी सहज जनभाषा की लोकमय धारा को भवानी प्रसाद मिश्र ने आगे बढ़ाया है। उनकी तथा केदारनाथ अग्रवाल की काव्य-भाषा में एक अद्‌भुत साम्य है। दोनों बोलचाल की लोकभाषा से कविता को दुहते हैं। चूंकि दोनों का अनुभव स्पष्ट है फलतः दोनों की भाषा में अस्पष्टता, क्लिष्टता तथा उलझावन ही है। फिर भवानी की काव्य-भाषा में शब्दों की नर्मदा प्रवाहित है। तत्सम-तद्‌भव, देशज सभी प्रकार के शब्द रगड़ खाकर उनकी काव्यात्मकता में चमक उठते हैं। उनकी अर्थदीप्ति में अभिधा का मनोरम जगत है और लक्षणा-व्यंजना का चमत्कार भी। कभी विक्षोभ-विद्रोह और प्रहार की भाषा है तो कभी भाषा की धूप-चाँदनी का प्यार भरा दुलार है। घोषित तौर पर उनकी कविता जनसामान्य की व्यथा को वाणी देती है और उसी की भाषा में वाणी देती है। उनकी कथनी-करनी एक है।

यह काव्य-भाषा अपनी काव्य संवेदना में हृदयस्पर्शी एवं गीतात्मक है उसमें तुक और लय का मोहक जादू है और अप्रचलित, जटिल-दार्शनिक संकल्पना वाले शब्दों का निषेध है। बिना कोश की सहायता से यह भाषा समझ में आती है। इस काव्य-भाषा की सम्प्रेषणीयता को हिंदी के सभी आलोचकों ने एक मत से सराहा है। सार-संक्षेप यह कि उनकी भाषा की सपाट बयानी कविता में विशेष स्वाद देती है और मिठास का स्वर पाठकों के प्राणों में प्यार का उद्वेलन भर देता है।

30.4.3 काव्य प्रतीक और काव्य बिंब

छायावादोत्तर काल में राजनीतिक-सामाजिक परिवेश के बदलाव से कविता के भीतरी और बाहरी ढांचे में भारी परिवर्तन हुआ है। भवानी प्रसाद मिश्र ने अपने देश और काल की इस चेतना को बातचीत की लय से पकड़ा है। इस बातचीत की लय का आत्मीय संवाद ही उनकी अभिव्यक्ति की खोज है। इसकी खोज की ताकत से उन्होंने भाषा की गठन,

उसकी प्रतीक योजना को बदला है। इन प्रतीकों ने गुस्सा, खीझ, भय, आतंक, संतुलन, विसंगति, विद्रूपता और अवसाद आदि अमूर्त भावों को मूर्त करने का प्रयास किया है। प्रायः मिश्र जी ने प्रकृति के प्रतीकों से अपना अभिप्रेत अर्थ स्पष्ट किया है। उनके प्रिय प्रतीकों में कमल, नर्मदा, जंगल, शेर-चीता, बादल, कोकिल, वसंत, फूल-पौधे; बच्चे, खेतिहर किसान हैं। ऐतिहासिक व्यक्तियों में वे अशोक, गांधी को बार-बार मानवता का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीक के अर्थ में लाते हैं। झंडा, खादी, चरखा, चन्दन, आकाश आदि सत्याग्रह-युग के प्रतीक बार-बार आए हैं —

हो गया झंडा हमारा तय
हमें कोई अब नहीं है भय।

कविता में तिरंगा-झंडा पूरी शक्ति एवं मर्यादा से आता है, पर नदी के प्रतीक सांस्कृतिक परंपरा के प्रतीक बनकर आते हैं। इन प्राकृतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रतीकों ने उनकी काव्य-भाषा में अर्थध्वनि की गहनता, गरिमा और उदात्तता पैदा की है।

इस सृजन में काव्यबिंब डाल पर फूल की तरह सजहता से खिलते हैं, पर उनके प्रति भवानी के कवि का कोई अतिरिक्त मोह नहीं है। वे सबसे ज्यादा ध्यान बिंब पर केन्द्रित न करके भाव के पारदर्शी, सम्प्रेषण व्यापार पर देते हैं। अपने पाठक से हृदय संवाद करते हुए वे छायावादियों की भाँति चित्र मोह में नहीं पड़ते। अनायास ही वे सन्नाटा का बिंब ला सकते हैं और नींद में ऊँघते सतपुड़ा के जंगल, नर्मदा के गति बिंब भी। आजादी के बाद के मोह-भंग को वे शब्द बिंबों में आंक सकते हैं जैसे —

1) बन्द गलियों में कहीं बच्चे खड़े हैं।
2) हाय रे, बचपन तलक सुख से न बीता।
3) जी, लोगों ने तो बेच दिए ईमान।
4) फूल लाया हूँ कमल के क्या करूँ इनका।
5) आप सभ्य हैं क्योंकि धान से भरी आप की कोठी।
6) मैं असभ्य हूँ क्योंकि चीर कर धरती धान उगाता।

इन बिंबों में समय और समाज की व्यथा-कथा का पूरा संदर्भ बोल रहा है। बिखरे बिंबों की एक माला उनकी कविता में रहती है इस दृष्टि से "गीत फरोश", "सन्नाटा", "प्रलय", "सतपुड़ा के जंगल", "मंगल वर्षा" जैसी कविताएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। हमारी ऐन्द्रिय संवेदना को अपने मर्म से पकड़ने वाली कविताएं उन्होंने अधिक लिखी हैं — यथा

बूँद टपकी एक नभ से
किसी ने झुक कर झरोखे से
कि जैसे हँस, दिया हो
हँस रही सी आँख ने जैसे
किसी को कस दिया हो,

अनुभव और अनुभूति के सरल-तरल बिंब उनकी कविता की शक्ति है। ग्रामीण संवेदना के ताजे बिंब अर्थदीप्ति की गति से भरे हैं। अमूर्त अगोचर और अलौकिक अनुभूति की बात वे कम करते हैं, वे मूर्त जीवन-जगत के व्यापार को काव्यात्मक बिंब में उजागर करते हैं। पर उनकी कविता बिंब का पर्याय नहीं है, सपाट बयानी में भी वे अपनी बात खुलकर कह लेते हैं। बोलचाल की लय शक्ति के कारण उनकी कविताएँ जनता में प्रसिद्ध रही हैं।

30.4.4 लय और छंद

प्रायः भवानी प्रसाद मिश्र ने तुकांत छंद में रचनाएँ की हैं, पर मुक्त छंद का अभ्यास भी उन्हें अच्छा है। उनके छंद, भाव को आकार देते हैं, वाक्य को तरासते हैं और तुक-अर्थ को सँवारते हैं। इसलिए जिसे "तुकबंदी करना" कहते हैं, वह काम वे कभी नहीं करते हैं, तुक को भाव-संगीत, ध्वनि संगीत की आंतरिकता के लिए ठीक से मिलाते हैं। जैसे "घर की याद" कविता की दो काव्य पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं —

पिता जी जिनको बुढ़ापा
एक क्षण भी नहीं व्यापा।

यहाँ "बुढ़ापा" और "व्यापा" का लाना मात्र तुक मिलाने के लिए नहीं किया गया है फलतः दोनों तुकों ने अर्थ प्रकाश किया है। इस अर्थ लय की सिद्धि भी कहा जा सकता है। यह लय भाव वैचित्र्य से रमणीयता में ढाली गई है और उपमान योजना — चन्द्र, सूर्य, नर्मदा, संत आदि ने इसमें भाव प्रसार किया है।

भवानी प्रसाद के काव्य में शास्त्रीय विधान के प्राचीन छंद खोजने पर भी नहीं मिलते। उन पर प्राचीन छंदों की महिमा का आतंक कभी नहीं रहा। माखनलाल चतुर्वेदी की भाँति वे लोक जीवन की लोकलय को लेकर अपना छंद गढ़ते हैं। उनके गीतों में कजरी, मल्हार-आल्हा, लावनी जैसे लोक-रागों की रागनियाँ निर्झर की भांति स्वतः फूटती हैं। कभी-कभार बंगला का पयार छंद "सन्नाटा" जैसी कविता में चमक छोड़ता है — पर अन्य कविताओं के लिए लय, छंद का अन्वेषण वे स्वयं करते रहे हैं। "राही नहीं, राहों के अन्वेषी" जैसा प्रयोग उनके लिए बेधड़क किया जा सकता

है। रचना की लयात्मक सहजता, भावगति की तीव्रता और प्रखरता काव्यात्मकता को कैसे चमका देती है, यह कला भवानी भाई की अपनी विशिष्ट है जिससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

बोध प्रश्न 3

1 भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य शिल्प की विशेषताओं पर पाँच पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2 मिश्र जी के काव्य में प्रयुक्त काव्य-रूपों पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3 मिश्र की काव्य-भाषा की विशेषताओं पर दस पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4 मिश्र जी के काव्य प्रतीकों तथा काव्य बिंबों की मूल विशिष्टताओं पर सात पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5 मिश्र जी के लय विधान एवं छंदों पर चार पंक्तियों में अपने विचार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

30.5 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या

काव्य वाचन

कमल के फूल

फूल लाया हूँ कमल के।
क्या करूँ इनका।
पसारें आप आँचल,
छोड़ दूँ,
हो जाय जी हल्का।

किन्तु होगा क्या कमल के फूल का?
कुछ नहीं होता
किसी की भूल का —
मेरी कि तेरी हो —

ये कमल के फूल केवल भूल हैं।
भूल से आचँल भरूँ ना
गोद में इनका सँभाले
मैं वजन इनके मरूँ — ना।

ये कमल के फूल
लेकिन मानसर के हैं
इन्हें हूँ बीच से लाया,
न समझो तीर पर के हैं।

भूल भी यदि हैं
अछूती भूल हैं,
मानसर वाले
कमल के फूल हैं।

गीत फरोश

जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।
मैं तरह-तरह के
गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम-किसिम के गीत
बेचता हूँ!

जी, माल देखिए दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं, काम बताऊँगा;
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं *पस्ती*[1] में मैंने;
यह गीत सख्त सरदर्द भुलायेगा;
यह गीत पिया को पास बुलायेगा।
जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
पर पीछे-पीछे अक्ल जगी मुझको
जी, लोगों ने तो बेच दिये ईमान।
जी, आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान।
मैं सोच-समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ
जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।

यह गीत सुबह का है, गाकर देखें;
यह गीत ग़ज़ब का है, ढाकर देखें;
यह गीत ज़रा सूने में लिक्खा था,
यह गीत वहाँ पूने में लिक्खा था,
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,
यह गीत बढ़ाये से बढ़ जाता है,

यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
जी, यह मसान में भूत जगाता है,
यह गीत भुवाली की है हवा हुजूर
यह गीत तपेदिक की है दवा हुजूर
मैं सीधे-सादे और अटपटे
गीत बेचता हूँ
जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।

जी, और गीत भी हैं दिखलाता हूँ;
जो, सुनना चाहें आप तो गाता हूँ,
जी, छंद और बेछंद पसंद करें —
जी, अमर गीत और वे जो तुरंत मरें,
ना, बुरा मानने को इसमें क्या बात,
मैं पास रखे हूँ कलम और दवात
इनमें से भाये नहीं नये, लिख दूँ
जी, नए चाहिये नहीं, गये लिख दूँ।
इन दिनों कि दुहरा है कवि धन्धा,
हैं दोनों चीजें व्यस्त, कलम, कन्धा।
कुछ घंटे लिखने के, कुछ फेरी के
जी, दाम नहीं लूँगा इस देरी के।
मैं नये पुराने सभी तरह के
गीत बेचता हूँ।
जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।

जी, गीत जन्म का लिखूँ, मरन का लिखूँ,
जी, गीत जीत का लिखूँ, शरन का लिखूँ;
यह गीत रेशमी है, यह खादी का।
यह गीत पित्त का है, यह बादी का।
कुछ और डिजाइन भी हैं, ये इल्मी —
यह लीजे चलती चीज़, नयी फ़िल्मी,
यह सोच-सोच कर मर जाने का गीत,
यह दुकान से घर जाने का गीत,
जी नहीं, दिल्लगी की इसमें क्या बात?
मैं लिखता ही तो रहता हूँ दिन-रात!
तो तरह-तरह के बन जाते हैं गीत,
जी, रूठ-रूठकर मन जाते हैं गीत,
जी, बहुत ढेर लग गया, हटाता हूँ,
गाहक की मर्जी — अच्छा, जाता हूँ।
मैं बिल्कुल अन्तिम और दिखाता हूँ —
या भीतर जाकर पूछ आइये, आप,
है गीत बेचना वैसे बिल्कुल पाप;
क्या करूँ मगर लाचार हार कर
गीत बेचता हूँ।
जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।

संदर्भ सहित व्याख्या

उद्धरण 1

फूल लाया हूँ कमल के।
क्या करूँ इनका।
पसारें आप आँचल,
छोड़ दूँ,
हो जाए जी हल्का।

किंतु होगा क्या कमल के फूल का?
कुछ नहीं होता
किसी की भूल का —
मेरी कि तेरी हो —

ये कमल के फूल केवल भूल हैं।
भूल से आँचल भरूँ ना
गोद में इनका सँभाले
मैं वजन इनके मरूँ — ना।

ये कमल के फूल
लेकिन मानसर के हैं
इन्हें हूँ बीच से लाया,
न समझो तीर पर के हैं।

संदर्भ : रचना का नाम .....

.....

रचनाकार का नाम .....

.....

रचनाकार के विषय में .....

.....

प्रसंग : भवानी प्रसाद मिश्र ने मानवीय आस्था परक मूल्यों पर कविता लिखी है। उनकी काव्य-संवेदना में वनस्पति जगत् की चेतना का आदर है। वे मानव तथा प्रकृति के "तदाकार भाव" के प्रति समर्पित रहे हैं। प्रकृति के भावों का उत्तमांश है — फूल। फूल ही भारतीय परंपरा के मूल भावों का आंतरिक संस्कार रहे हैं। उसी संस्कार से जोड़ते हुए उन्होंने यह मंगलाचरण लिखा है।

व्याख्या : कवि का कहना है कि मैं अपनी भावनाओं को कमल के फूल के रूप में मानव को देना चाहता हूँ। इन कमल के फूलों को प्राप्त करने के लिए मैंने मानसर की गहराई में प्रवेश किया है। हर जोखिम उठाकर इन्हें लाया हूँ। इन्हें मैंने किनारे से नहीं, बीच में धँसकर प्राप्त किया है। यदि इन फूलों का लाना एक भूल भी मानी जाती है तो भी यह भूल अनुपम है कारण, यह भूल कवि मन के पूरे भावबोध का अनिवार्य हिस्सा रही है। यहाँ ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि ये कमल के फूल हृदय के मान-सरोवर के भीतर डूबकर तोड़े गए हैं।

विशेष

1 कमल का फूल भारतीय परंपरा में सर्वाधिक आदर और समर्पण का भाव व्यक्त करता रहा है। हमारी पूरी जातीय चेतना के मिथक कमल से पटे पड़े हैं। कमल विष्णु की एक आँख है, विष्णु कमलों से ही माँ दुर्गा की पूजा करते हैं।

2 इस मंगलाचरण को कवि ने "दूसरा सप्तक" 1951 ई. सं. अज्ञेय के सहयोगी संकलन में प्रथम कविता के रूप में दिया है। यहां कवि ने देवता की वंदना नहीं की, अपितु मानव की महिमा के लिए वस्तु निर्देशात्मक रूप को व्यक्त किया है।

3 मानसरोवर भारतीय मिथक परंपरा में वह पवित्र जल का निर्मल सरोवर है जिसमें हंस मोती चुगते हैं और ज्ञानी का ज्ञान कमल यहीं खिलता है।

4 कमल प्रतीक है — भाव की उज्ज्वलता का, आंतरिक अनुभूति के संस्कार का। फलतः यह सांस्कृतिक प्रतीक है।

5 पूरा पद्य खण्ड ऐसे काव्यात्मक बिंब को जन्म देता है जो प्रार्थना की भावमुद्रा को मूर्त करता है।

6 "इन्हें धँस बीच से लाया" काव्य पंक्ति कवि संघर्ष या कवि कर्म के संघर्ष तथा अनुभूति की ईमानदारी का संकेत देती है।

उद्धरण 2

जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।
मैं तरह-तरह के
गीत बेचता हूँ,
मैं किस्सिम-किस्सिम के गीत
बेचता हूँ!

जी, माल देखिए दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं, काम बताऊँगा;
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने;
यह गीत सख्त सरदर्द भुलायेगा;
यह गीत पिया को पास बुलायेगा।

संदर्भ : रचना का नाम.....

.....

रचनाकार का नाम.....

.....

रचनाकार के विषय में.....

.....

प्रसंग : "गीत फरोश" कविता भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य व्यक्तित्व को परिभाषित करती है। जीवन की जटिल स्थितियों के कारण कवि कर्म कठिन होता गया। इतना ही नहीं, पूंजीवादी-व्यवसायी युग में हर चीज बिकाऊ हो गई। तीखे व्यंग्य का यह कविता उदाहरण है इस कविता में महत्वपूर्ण यह स्थिति है कि कवि को कैसे जीने के लिए गीत बेचने वाला बन जाना पड़ा। ऐसी हालत के अभिव्यक्त करने के कारण यह कविता कला और समाज दोनों पर व्यंग्य है।

व्याख्या : कवि कहता है कि स्थिति-परिस्थिति से लाचार होकर मुझे गीत बेचने वाला बनना पड़ा है। मैं तरह-तरह के अनेक दिलचस्प भावों, कार्यों को करने वाले गीत बेचता हूँ। मैं हर किस्म के हर रंग के गीत बेचता हूँ। आप इन गीतों को छांटकर पसंद करें, फिर मैं कीमत मागूँगा। इनका दाम अधिक नहीं लूँगा। वे गीत निरर्थक नहीं हैं, इनका सार्थक होना भी बताऊँगा। मैंने कुछ गीत आनंद और जीवन के उल्लास में लिखे हैं और कुछ गीत मुझे निराशा, अवसाद, पराजय की मनःस्थिति में लिखने पड़े हैं। किन्तु मेरे गीतों का उद्देश्य है मानव की भीतरी तकलीफों को कम करना, तनाव को कम करना, मसलन सिर दर्द भगाकर चैन देना और गीतों से प्रियतम को प्रिया के पास लाना रहा है। जाहिर-तौर पर मैंने अभाव को हटाकर भाव की स्थिति के लिए सृजन कर्म किया है। अतः मेरे गीतों का कार्य जन जीवन की लोकमंगल की ओर ले जाना है।

विशेष

1. "गीत फरोश" एक ऐसी प्रसिद्ध कविता है जिसने कवि को अपार लोकप्रियता प्रदान की है।
2. इस कविता ने गंभीर बात को निहायत सरल-सहज ढंग से अभिव्यक्त करने का एक नया ढंग ईजाद किया है। यह एक नया प्रयोग है काव्य तकनीक और कविमर्म की परख का। इस शैली की हिंदी में यह अकेली ही कविता है।
3. इस कविता का व्यंग्य कवि की "टोन" या लहजे में है और गीत बेचने वाले की लाचारी का कारण भी दिया गया है।
4. गरीबी से तंग आकर कुछ दिनों तक मिश्र जी ने पूना फिल्म इंस्टीट्यूट के लिए गीत लिखकर बेचे थे। उन्हें यह स्थिति असहनीय लगती थी। इस कविता में उसी व्यथा का यथार्थ चित्र है।
5. नयी कविता पर भाव एवं भाषा की क्लिष्टता का दोष लगाया जाता है पर इस कविता के भावों को व्यक्त करने वाले प्रतीक बिंब "मस्ती", "पस्ती" एकदम स्पष्ट एवं सरल हैं।
6. काव्य का प्रयोजन है — आनन्द और भाव-परिष्कार, आत्मविस्तार। कवि लोक-संवेदना से अपनी व्यथा को आत्म-प्रसार की ओर मोड़ देता है। कविता की इस विश्व-दृष्टि ने उसे विशिष्ट बनाया है।
7. यह व्यंग्य भी है कि जब कला बेचनी पड़े और उसके लिए गीतकार को झटकना पड़े तो समझना चाहिए कि संस्कृति खतरे में है।
8. यह कविता भाव और लय के कारण पढ़ने और गाने का मधुर सौन्दर्य प्रस्तुत करती है तथा काव्य-भाषा की सहज सर्जनात्मकता का 'मॉडल' भी सामने लाती है।
9. कविता तनाव की ऊर्जा से जन्मती है, वह कवि के मानस का मूल्यवान अंश है। उसे बेचने में कष्ट होता है, क्योंकि वह अनुभव की कन्या है।

उद्धरण 3

जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
पर पीछे-पीछे अक्ल जगी मुझको
जी, लोगों ने तो बेच दिये ईमान।
जी, आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान।
मैं सोच-समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ
जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।
यह गीत सुबह का है, गाकर देखें;
यह गीत ग़ज़ब का है, ढाकर देखें;
यह गीत ज़रा सुने में लिक्खा था,

यह गीत वहाँ पूने में लिक्खा था,
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,
यह गीत बढ़ाये से बढ़ जाता है,
यह गीत भूख और प्यास भागता है,
जी, वह मसान में भूत जगाता है,
यह गीत भुवाली की है हवा हुजूर
यह गीत तपेदिक की है दवा हुजूर
मैं सीधे-सादे और अटपटे
गीत बेचता हूँ
जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।

संदर्भ : रचना का नाम .....

.....

रचनाकार का नाम .....

.....

रचनाकार के विषय में .....

.....

प्रसंग : "गीत फरोश" कविता भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य व्यक्तित्व को परिभाषित करती है। जीवन की जटिल स्थितियों के कारण कविकर्म कंठिन होता गया। पूँजीवादी व्यवसायी युग में हर चीज बिकाऊ हो गई। तीखे व्यंग्य का महत्वपूर्ण उदाहरण इस कविता में यह स्थिति है कि कवि को जीने के लिए गीत बेचने वाला बन जाना पड़ा। ऐसी हालत के कारण यह कविता कला और समाज दोनों पर व्यंग्य है।

व्याख्या : कवि अपनी मनोव्यथा को व्यक्त करता हुआ कहता है कि शुरू-शुरू में तो मुझे गीत बेचने में बेहद लज्जा का अनुभव हुआ। मुझे बराबर लगता रहा कि कोई अपने अन्तर्जगत के संवेदनानुभवों को भी क्या बेच सकता है? कविता तो आत्मदान की वस्तु है, वह व्यापार या नफा कमाने की चीज़ नहीं। उसे बाजार की वस्तु बनाना उसके मूल्य को गिराना है। किन्तु कुछ दिन बाद मुझे अक्ल आई कि इस देश में लोग अपना ईमान या चरित्र बेच रहे हैं। उन्हें किसी भी बुरे काम पर पश्चाताप नहीं होता है। इर बार गलत काम पर लोग आदर्श का बर्क चढ़ा देते हैं और पैसा कमाने के नाम पर अन्धे होकर कुछ भी कर सकते हैं। देश में मूल्यों का यह अन्धापन सब जगह व्याप्त हो गया है। इसलिए जो लोग ईमान बेचने की बात सुनकर हैरानी जताते हैं या आश्चर्य करने का नाटक करते हैं — उनकी कलई खुल गई है। अब मैं इस व्यक्तिवादी-भोगवादी समाज की नब्ज पहचान चुका हूँ। मुझे पता है कि गीत बेचना बुरा नहीं है। खूब सोच-समझ कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि गीत बेचकर यदि जीवन यापन हो सके तो हर्ज क्या है?

विशेष

1 कविता में मूल व्यंग्य उस पूँजीवादी-सामन्तवादी व्यवस्था पर है जिसमें "लोगों ने तो बेंच दिए ईमान" की हालत पहुँच चुकी है। देश-भक्ति, मानव-सेवा का उपदेश देने वाले लोग देश को लूट रहे हैं।

2 रचना कर्म में प्रवृत्त होने वाला रचनाकार क्या करे जब चारों ओर मूल्यान्धता फैली हो। विवश होकर उसे कला को बाजार देना पड़ता है।

3 कवि का गांधी विचार-दर्शन अपने समय की विसंगति और विडम्बना पर निर्भयता से 'बेच दिए ईमान' का दर्द कह देता है। पूरी स्थिति का यह भयावह बिंब है।

4 ईमान बेचने का अर्थ सन्दर्भ भारतेन्दु के नाटक के 'जातवाला' की याद दिलाता है, जो टके के लिए जात बेचने को तैयार है। आर्थिक मूल्यों की प्रधानता वाले समाज में हर वस्तु बिकाऊ हो जाती है क्यों? भवानी भाई और भारतेन्दु की चिंता इस विचार-बिन्दु पर एक हो गई है।

5 आधुनिक समाज की विषम स्थितियों पर यह कविता सटीक टिप्पणी करती है। भारतेन्दु के नाटक "अंधेर नगरी" में चूरन और चने बेचने वालों के लटकों और बोलियों का सर्जनात्मक उपयोग है। "गीत फरोश" में दवा, मेवा, ईमान फरोशों की बोली, लहजे और लटकों को कविता में ढाल दिया गया है।

6 प्रयोग के स्तर पर कवि ने बोलचाल की शब्दावली से भी ज्यादा बोली के लहजे को चुना है।

30.6 मूल्यांकन

छायावादोत्तर हिंदी कविता में भवानी प्रसाद मिश्र को संतों की लोक जागरण परंपरा में रखकर ही परखा जा सकता है। उनका कवि-स्वभाव कबीर से मिलता है। सत्य कहने के लिए वे हर तरह का जोखिम उठाने को हर समय तैयार रहते

हैं। व्यवस्था-विरोध में उनका विद्रोही निर्भय रहता है। उनकी कविता का संकल्प यही रहा है कि शब्द को तलवार से ज्यादा पैना बनाना है। गाँव के प्राणी की व्यथा को जन-भाषा में अभिव्यक्त करना है। शब्द की रक्षा ही मानव की रक्षा है —

शब्दकार को
अगर जरूरत पड़े
तो अपने शब्दों पर
मरना चाहिए।

नयी कविता में, गांधी विचार-दर्शन में आस्था रखने वाले वे अकेले कवि हैं। उनकी कविता में कालिदास की प्रकृति संवेदना का नए भाव बोध के साथ विस्तार एवं प्रसार है। सामाजिक विषमता, अन्याय-शोषण का चित्रण करने में वे कभी पीछे नहीं रहते। पर उनकी कविता में पश्चिम की नकल नहीं है, ठेठ लोक लय की सर्जनात्मकता है। लोक संवेदना और लोक वेदना को लोक-भाषा में निर्भयता में अभिव्यक्ति देने वाला यह कवि अपने कविकर्म में एकदम विशिष्ट है।

भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यसर्जना का अर्थ विधान और बिंब विधान कई स्तरों पर अपने समकालीनों से विशेषकर. अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर आदि से विशिष्ट और अलग दृष्टिगत होता है। वे सामान्य आदमी की व्यथा को रचना की केन्द्रीय संवेदना से उजागर करते हैं। इस सामान्य जन में गाँव के किसान-मजदूर की स्थितियों-चिंताओं के यथार्थ चित्र हैं। आजादी के बाद का मोहभंग भवानी प्रसाद मिश्र में स्पष्टतः अभिव्यक्त होता है। प्रगति प्रयोग युग के अधिकतर रचनाकार — वैचारिक स्तर पर साम्यवाद समाजवाद के अधिक निकट रहे हैं, पर भवानी प्रसाद मिश्र ने एकनिष्ठ आस्था के साथ खुले रूप में गांधी विचार-दर्शन को व्यक्त किया है। बोलचाल की काव्य-भाषा. प्रतीक विधान छंद और लय में भी उनका स्वर अलग सुनाई देता है। वे रूप विधान से ज्यादा विषयवस्तु की महत्ता को स्थान देते हैं। वैचारिक स्तर पर अस्तित्वाद, अलगाववाद के पश्चिमी दर्शन को अपनी कविता में भटकने तक नहीं देते। एकदम सहज गद्य विन्यास, बोलचाल का लहजा और छंदों का खनकता प्रयोग करते हैं। उनकी बुनियादी चिंताओं में भारतेन्दु, निराला और केदारनाथ अग्रवाल की लोकपरंपरा जीवन्तता से धड़कती है। अपनी सर्जनात्मक मौलिकता से उन्होंने नयी कविता को नया काव्य मुहावरा दिया है।

30.7 विचार संदर्भ और शब्दावली

प्रभा : सं. माखन लाल चतुर्वेदी, सन् 1913 ई. में, खडवा, मध्य प्रदेश से निकलने वाली क्रांतिकारी विचारों की पत्रिका।

कर्मवीर : सं. माखन लाल चतुर्वेदी — जबलपुर से 1919 ई. में निकलने वाला पत्र। क्रांतिकारी विचारों के लिए प्रसिद्ध।

सरस्वती : भारतीय भाषा एवं साहित्य की अंमर पत्रिका। इसका सम्पादन आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लम्बे समय तक किया। इस पत्रिका ने अनेक लेखक बनाए।

वड्सवर्थ : अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद के कवि (1770-1850 f.) लिरिकल वैलेड्स की भूमिका (1798 f.)। इस भूमिका ने काव्य.विषय तथा काव्य भाषा दोनों को लेकर नव्य अभिजात्यवादियों (नियो-क्लासिकल) पर निमर्म आक्रमण किया। सन् 1800 ई. में इसका दूसरा संस्करण आया।

अतिभावुकता : (सेन्टिमेन्टलिज्म) एक ऐसा खतरा है जिसमें भावुकता के अतिरेक से मानसिक संतुलन नहीं रह पाता।

रिड्र्चस (1893-1979 ई.) : ने भाषा के दो भेद किए — वैज्ञानिक तथा रागात्मक भाषा। वैज्ञानिक भाषा का प्रयोग तथ्य कथन के लिए होता है तथा रागात्मक भाषा का भाव संचार के लिए।

कलात्मक अनुभूति : उस अनुभूति को कहते हैं जिसमें संघटन सामान्य अनुभूतियों की तुलना में अधिक होता है।

टी.एस. इलियट (1888-1965 ई.) : का मूर्त विधान सिद्धांत (आब्जेक्टिव कोरिलेटिव) भारतीय रस सिद्धांत का विभावन व्यापार है। कविगत भाव की अभिव्यक्ति का प्रधान और अनिवार्य साधन है विभाव। भाव के कारण को विभाव कहते हैं।

नर्मदा : मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध नदी। यह क्वारी नदी है। इसकी गति और प्रवाह में अपार शक्ति है। माना जाता है कि परशुराम ने इसी के तट पर तपस्या की थी।

30.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : *समकालीन हिंदी कविता,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

कृष्णदत्त पालीवाल : *भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार,* साहित्य निधि, सी-38, ईस्ट कृष्णा नगर, दिल्ली-110051।

प्रेम शंकर रघुवंशी : *भवानी भाई,* सरला प्रकाशन, नई दिल्ली।

30.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 देखिए भाग 30.2.1

2 देखिए भाग 30.2.2

3 एवं 4 देखिए भाग 30.2.3

बोध प्रश्न 2

1 देखिए 30.3.1 (काव्यानुभूति)

2 देखिए 30.3.2 (मूल्य दृष्टि)

3 देखिए 30.3.3 (मानव और प्रकृति)

4 देखिए 30.3.4 (ज़न जीवन के विषय संघर्षों की वाणी)

5 गांधी विचार दर्शन

बोध प्रश्न 3

1 देखिए 30.4 (काव्य-शिल्प)

2 देखिए 30.4.1 (काव्य-रूप)

3 देखिए 30.4.2 (काव्य-भाषा)

4 देखिए 30.4.3 (काव्य प्रतीक और काव्य बिंब)

5 देखिए 30.4.4 (लय और छंद)